Role and Function of Clinical Psychologists in Child Guidance Clinic

बाल मार्गदर्शन क्लिनिक (**Child Guidance Clinic - CGC**) एक ऐसा केंद्र होता है जहाँ बच्चों और किशोरों की व्यवहारिक, भावनात्मक और सीखने संबंधी समस्याओं का उपचार किया जाता है। यहाँ एक **नैदानिक मनोवैज्ञानिक (Clinical Psychologist)** की भूमिका बहुत ही संवेदनशील और महत्वपूर्ण होती है।
यहाँ उनके कार्यों और भूमिकाओं का विस्तृत विवरण दिया गया है:

---

1. मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन (Psychological Assessment)

बच्चा जब पहली बार क्लिनिक आता है, तो मनोवैज्ञानिक उसका गहन मूल्यांकन करता है ताकि समस्या की जड़ का पता चल सके।

- **केस हिस्ट्री लेना:** माता-पिता से बच्चे के जन्म, विकास (मिल का पत्थर/Milestones), स्कूल के प्रदर्शन और घर के माहौल के बारे में जानकारी लेना।
- **बौद्धिक मूल्यांकन (IQ Testing):** यह देखना कि बच्चे की मानसिक क्षमता उसकी उम्र के अनुसार है या नहीं। इसके लिए **WISC** या **Binet** जैसे टेस्ट का उपयोग किया जाता है।
- **सीखने की अक्षमता की जाँच (LD Assessment):** यदि बच्चे को पढ़ने या लिखने में दिक्कत है (जैसे डिस्लेक्सिया), तो उसके लिए विशिष्ट परीक्षण करना।
- **व्यक्तित्व और व्यवहार परीक्षण:** बच्चे के स्वभाव, चिंता या आक्रामकता को समझने के लिए प्रोजेक्टिव टेस्ट (जैसे CAT - Children's Apperception Test) का उपयोग करना।

---

2. उपचार और थेरेपी (Therapeutic Interventions)

निदान के बाद, मनोवैज्ञानिक बच्चे की उम्र के अनुसार विभिन्न उपचार पद्धतियों का उपयोग करता है:

- **प्ले थेरेपी (Play Therapy):** छोटे बच्चे अपनी भावनाओं को बोलकर नहीं बता सकते। खेल-खेल में उनके मन के डर और भावनाओं को समझना और उनका इलाज करना।

- **व्यवहार परिमार्जन (Behavior Modification):** बुरी आदतों (जैसे बिस्तर गीला करना, अंगूठा चूसना या गुस्सा करना) को सुधारने के लिए रिवॉर्ड (पुरस्कार) सिस्टम का उपयोग करना।
- **संज्ञानात्मक थेरेपी (CBT):** किशोरों (Adolescents) के नकारात्मक विचारों और तनाव को दूर करने के लिए।
- **सामाजिक कौशल प्रशिक्षण:** उन बच्चों की मदद करना जिन्हें दूसरों से बात करने या दोस्त बनाने में कठिनाई होती है (जैसे ऑटिज्म के मामले में)।

---

3. माता-पिता को परामर्श (Parental Counseling & Training)

CGC में बच्चे का इलाज तब तक सफल नहीं होता जब तक माता-पिता शामिल न हों।

- **पेरेंटिंग स्किल:** माता-पिता को सिखाना कि वे बच्चे के जिद्दी व्यवहार या गुस्से को घर पर कैसे संभालें।
- **तनाव कम करना:** बच्चे की बीमारी के कारण माता-पिता जो मानसिक तनाव झेलते हैं, उसे कम करने में मदद करना।

---

4. स्कूल और शिक्षकों के साथ समन्वय (School Liaison)

मनोवैज्ञानिक अक्सर बच्चे के स्कूल के संपर्क में रहता है ताकि:

- शिक्षकों को बच्चे की विशेष जरूरतों (Special Needs) के बारे में बताया जा सके।
- क्लासरूम में बच्चे के बैठने के स्थान या पढ़ाई के तरीके में जरूरी बदलाव (Accommodations) सुझाए जा सकें।

---

5. विशेष विकारों का प्रबंधन (Management of Specific Disorders)

CGC में मनोवैज्ञानिक मुख्य रूप से निम्नलिखित समस्याओं पर काम करता है:

विकार	मनोवैज्ञानिक का कार्य
ADHD	एकाग्रता बढ़ाना और अति-सक्रियता (Hyperactivity) को नियंत्रित करना।
Autism	संचार कौशल और सामाजिक व्यवहार में सुधार करना।

विकार	मनोवैज्ञानिक का कार्य
Anxiety/Phobia	स्कूल जाने का डर या अंधेरे के डर को दूर करना।
Learning Disability	पढ़ाई के वैकल्पिक तरीके और रेमेडियल टीचिंग (Remedial Teaching) सुझाना।

---

6. निवारक और विकासात्मक भूमिका (Preventive Role)

- **जागरूकता:** स्कूलों और समुदायों में कार्यशालाएं (Workshops) आयोजित करना ताकि लोग बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हों।
- **शीघ्र पहचान (Early Identification):** समस्याओं को शुरुआती स्तर पर पहचानना ताकि भविष्य में वे गंभीर रूप न लें।

निष्कर्ष

एक बाल मार्गदर्शन क्लिनिक में क्लिनिक साइकोलॉजिस्ट एक **मसीहा, शिक्षक और मित्र** की भूमिका निभाता है। उसका मुख्य उद्देश्य बच्चे के आत्मविश्वास को बढ़ाना और उसे समाज की मुख्यधारा में वापस लाना होता है।